महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

एम. ए. द्वितीय सत्र

विषय – ध्वन्यालोक

Code – SNKT2003

उपविषय – समासोक्ति आदि अलङ्कारों में ध्वनि अन्तर्भाव का निषेध

विश्वजित वर्मन
सहायक-आचार्य, संस्कृत विभाग
biswajitbarman@mgcub.ac.in

समासोक्ति आदि अलङ्कारों में ध्वनि के अन्तर्भाव का निषेध

अभाववादियों के मतखण्डन की अवसर पर आचार्य आनन्दवर्धन ने प्रतिपादित किया है कि उपमा-अनुप्रास आदि अलङ्कारों में वाच्य-वाचक ही प्रधान भूमिका निभाते है, किन्तु समासोक्ति, आक्षेप, विशेषोक्ति, पर्यायोक्ति, अपह्नुति, दीपक, सङ्कर आदि अलङ्कारों में वाच्यार्थ के साथ व्यङ्ग्यार्थ का भी सद्भाव होता है। विरोधियों का मत यह है कि यद्यपि समासोक्ति आदि अलङ्कारों में व्यङ्ग्यार्थ है, तो उसे भी ध्वनिकाव्य कहा जायेगा, किन्तु आचार्य आनन्दवर्धन इसका खण्डन करते हुए लिखते हैं कि समासोक्ति आदि अलङ्कारों में प्रतीयमान अर्थ का सद्भाव होने पर भी ध्वनि की प्रतीति नहीं होती है क्योंकि उसमें व्यङ्ग्यार्थ का चमत्कार नहीं होता।

समासोक्ति अलङ्कार में

समासोक्ति अलङ्कार का लक्षण है –

परोक्तिर्भेदकैः श्लिष्टैः समासोक्तिः ।

अर्थ – जहाँ श्लेषपूर्ण विशेषणों से अर्थ का संक्षेप होता है, वहाँ समासोक्ति अलङ्कार होता है ।

अर्थात् प्रस्तुत अर्थ की पुष्टि के लिए प्रयुक्त विशेषणों के तुल्य विशेषणों से जहाँ अप्रस्तुत अर्थ का कथन हो, उसे समासोक्ति अलङ्कार कहते है ।

उदाहरण-

उपोढरागेण विलोलतारकं तथा गृहीतं शशिना निशामुखम्।
यथा समस्तं तिमिरांशुकं तया पुरोऽपि रागाद्गलितं न लक्षितम्॥

वाच्यार्थ- सायंकाल की लालिमा धारण कर चन्द्रमा ने रात के प्रथम भाग (शाम) को इतना शीघ्र प्रकाशित कर दिया कि पूर्वदिशा की रक्तिमा से नष्ट समस्त अन्धकार को रात लक्षित नहीं कर सकी।

व्यङ्ग्यार्थ- एक प्रेमी (नायक) ने नायिका के मुख को जिसमें आखों की पुतलियां बिजली जैसी चमक रही थी, ऐसी चतुराई से चूमने के लिए पकड़ा, जिसके कारण वह नायिका प्रेम से विभोर होकर शरीर से गिरे हुए कपड़े तक को भी न जान सका।

यहाँ सायंकाल वर्णनीय होने के कारण मुख्य है। किन्तु प्रकरणता के कारण निशा (नायक) शशि (नायिका) का व्यवहार होने के कारण नायिका-नायक का व्यवहार उपचरित होता है।

यद्यपि नायिका-नायक के व्यवहार से निशा-शशि के व्यवहार प्रतीति होती है, किन्तु प्राधान्य न होने के कारण यहाँ ध्वनि नहीं हो सकता। आनन्दवर्धन ने कहा-

इत्यादौ व्यङ्ग्येनानुगतं वाच्यमेव प्राधान्येन प्रतीयते समारोपितनायिकानायकव्यवहारयोर्निशाशशिनोरेव वाक्यार्थत्वात्।

आनन्दवर्धनानुसार समासोक्ति अलङ्कार में सर्वदा व्यङ्ग्य का प्राधान्य नहीं होता है, इसलिए ध्वनि नहीं है।

आक्षेप अलङ्कार में

आक्षेप अलङ्कार में ध्वनि अन्तर्भाव का निषेध करने के लिए आनन्दवर्धन स्वयं कहते हैं-

आक्षेपेऽपि व्यङ्ग्यविशेषाक्षेपिणो वाच्यस्यैव चारुत्वं प्राधान्येन वाक्यार्थः।

आक्षेप अलङ्कार का लक्षण-

निषेधो वक्तुमिष्टस्य यो विशेषाभिधित्सया।
वक्ष्यमाणोक्तविषयः स आक्षेपो द्विधा मतः॥

अर्थात्- व्यङ्ग्य विशेष को द्योतित करने के लिए अत्यन्त आवश्यक होने के योग्य इष्ट वस्तु के निषेध को आक्षेप अलङ्कार कहते हैं।

उदाहरण-

अनुरागवती सन्ध्या दिवसस्तत्पुरस्सरः।
अहो दैवगतिः कीदृक् तथापि न समागमः॥

वाच्यार्थ- सन्ध्या रक्तिमा से भरी हुई है और दिन भी उसके आगे आगे गतिमान है, तो भी दोनों का मिलन नहीं हो पाता। अहो विधाता तुम्हरा ये अत्यन्त आश्चर्यजनक विधान है।

व्यङ्ग्यार्थ- मिलन से उत्कण्ठित नायिका है, और प्रणय से भरा हुआ नायक है, किन्तु गुरुजनों के परतन्त्रता के कारण दोनों का मिलन नहीं हो पाता।

- आचार्य वामन के मत के अनुसार इस श्लोक में आक्षेप अलङ्कार और आचार्य भामह के मतानुसार इसमें समासोक्ति अलङ्कार है।

इस श्लोक में द्व्यर्थक विशेषणों के द्वारा सन्ध्या-दिवसरूप व्यवहार से नायक-नायिका का व्यवहार प्रकट होता है। परन्तु व्यङ्ग्य अर्थ नायक-नायिका की अपेक्षा दिवस-सन्ध्या रूप व्यवहार प्रधान होने के कारण सहृदयों को दिवस-सन्ध्यारूप वाच्यार्थ ही चमत्कारजनक प्रतीत होता है। अतः इसमें वाच्यार्थ का ही प्राधान्य विवक्षित होने के कारण ध्वनि संज्ञा नहीं होती है।

इसलिए ध्वन्यालोक में कहा है-

अत्र सत्यामपि व्यङ्ग्यप्रतीतौ वाच्यस्यैव चारुत्वमुत्कर्षवदिति तस्यैव प्राधान्यविवक्षा।

दीपक अलङ्कार में

दीपक और अपह्नुति अलङ्कार में भी व्यङ्ग्य रूप से उपमा की प्रतीति होने पर भी अप्राधान्य होने के कारण ध्वनि नहीं है।

लक्षण-

सकृद्वृत्तिस्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम्।
सैव क्रियासु बह्वीषु कारकस्येति दीपकम्॥

अर्थात् जहाँ एक ही धर्म अनेक धर्म से अन्वित हो उसे दीपक अलङ्कार कहते है। उदाहरण-

सञ्जहार शरत्कालः कदम्बकुसुमश्रियः।
प्रेयोवियोगिनीनां च निश्शेषसुखसम्पदः॥

अर्थात् शरत्काल ने कदम्बफुलों की शोभा और प्रिय प्रेयसी की सारी सुख-सम्पदाओं को नष्ट कर डाला।

इसमें एक ही शरत्काल कदम्बशोभा तथा वियोगिनी के सुखादि से अन्वित है। कदम्बशोभा एवं वियोगिनी के सुख-सम्पदाओं में उपमान-उपमेयभाव व्यङ्ग्य होने पर भी वाच्यार्थ का चमत्कार है।

अपह्नुति अलङ्कार में

अपह्नुति अलङ्कार का लक्षण

प्रकृतस्य निषेधेन यदन्यत्वप्रकल्पनम्। साम्यादपह्नुतिः।

अर्थात् जहाँ प्रस्तुत वस्तु को छिपाकर सत्सदृश अन्य वस्तु की स्थापना हो, उसे अपह्नुति अलङ्कार कहते है।

उदाहरण-

एतद्धि न तपः सत्यमिदं हालाहलं विषम्।
विशेषतः शशिकला-कोमलानां भवादृशाम्॥

अर्थात् चादनी के समान मनोरम विशेषकर आप जैसी सुकुमार व्यक्ति के लिए निश्चय ही यहाँ तप नहीं है, अपि तु हलाहल विष है।

- यहां प्रस्तुत तप के स्थान पर विष उपमान-उपमेयभाव व्यङ्ग्य होने पर भी वाच्यार्थ का चमत्कार है।

अनुक्तनिमित्तक विशेषोक्ति अलङ्कार में

विशेषोक्ति अलङ्कार में भी ध्वनि नहीं होता-

विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।

अर्थात् जहाँ कार्यसिद्धि के समस्त कारणों के विद्यमान रहते हुए भी कार्य न हो, उसे विशेषोक्ति अलङ्कार कहते है।

उदाहरण-

आहूतोऽपि सहायैरोमित्युक्त्वा विमुक्तनिद्रोऽपि।
गन्तुमना अपि पथिकः सङ्कोचं नैव शिथिलयति॥

अर्थात् मित्र द्वारा साथ चलने के लिए बुलाये जाने पर भी आता हूँ, ऐसा कह कर नींद तोड़ने पर भी प्रस्थानार्थ इच्छुक वह पथिक संकोच नहीं छोड़ता।

- यहाँ मित्र द्वारा आह्वान होने पर भी अतिशैत्य के कारण आलस्य अथवा प्रिया का स्वप्नदर्शन आदि वाच्यार्थ ही रमणीय है। अतः ध्वनि नहीं है।

पर्यायोक्ति अलङ्कार में

पर्यायोक्ति अलङ्कार में भी प्रधान रूप से व्यङ्ग्य की स्थिति है। किन्तु, ध्वनि व्यापक है और अलङ्कार व्याप्य है, व्यापक में व्यप्य का अन्तर्भाव नहीं होता। आचार्य भामह के मतानुसार पर्यायोक्ति अलङ्कार में व्यङ्ग्य का प्राधान्य नहीं होता है। उसमें वाच्य की ही स्थिति होती है।

पर्यायोक्ति अलङ्कार का लक्षण-

पर्यायोक्तं विना वाच्यवाचकत्वेन यद्वचः।

वाच्य-वाचक भाव के अतिरिक्त रूप से अवगमन होने पर जो प्रतिपादन पर्याय रूप से अन्य भङ्गी से बोला जाता है, वह पर्यायोक्ति अलङ्कार है।

उदाहरण-

गृहष्वध्वसु वा नान्नं भुञ्महे यदधीतिनः।
विप्रा न भुञ्जते तच्च रसदाननिवृत्तये॥

अर्थात् जिस अन्न को पढ़े लिखें ब्राह्मण नहीं खाते उसको हम घर या बाहर कहीं नहीं खाते हैं।

- इसमें भगवान श्रीकृष्ण का शिशुपाल से जहर मिला हुआ अन्न खाने मना करना व्यङ्ग्यार्थ है, किन्तु प्रकरण वश ब्राह्मणों के जूठे अन्न को खाने से मना करना वाच्यार्थ ही अधिक चमत्कार है।

अतः पर्यायोक्ति अलङ्कार में भी ध्वनि का अन्तर्भाव नहीं होता है।

संकर अलङ्कार में

संकर अलङ्कार में भी प्रधान रूप से ध्वनि की विवक्षा न होने के कारण ध्वनि का अन्तर्भाव नहीं होता है।

लक्षण-

नीरक्षीरनयाद्यत्र सम्बन्ध स्यत् परस्परम्।
अलङ्कृतीनामेतासां संकर स उदाहृता ॥

अर्थात् जहाँ दूध पानी की भाँति अलङ्कारों का परस्पर उपकार्य-उपकारक भाव हो, उसे संकर अलङ्कार कहते है।

उदाहरण –

प्रवातनीलोत्पलनिर्विशेषमधीरविप्रेक्षितमायताक्ष्याः।
तया गृहीतं नु मृगांगनाभ्यस्ततो गृहीतं नु मृगांगनाभिः ॥

अर्थात् जोड़ो की हवा से डोलते हुए नील कमल की भाँति चञ्चलाक्षी पार्वती ने अत्यन्त चञ्चलता पूर्वक देखना, क्या हरिणियों से सीखा ? या हरिणियों ने उनसे सीखा ?

- इसमें हरिणी और पार्वती के विलोकन में उपमान-उपमेयभाव होता है तथापि सन्देह अलङ्कार रूप वाच्यार्थ ही चमत्कार होता है। अतः संकर अलङ्कार में भी ध्वनि का अन्तर्भाव नहीं हो सकता।

जहाँ दो अलङ्कारों की सम्भावना हो वहाँ वाच्य और व्यङ्ग्य की समान प्राधान्यता होती है। अप्रस्तुतप्रशंसा अलङ्कार में भी सामान्यविशेष करके वाच्य और व्यङ्ग्य का समान प्राधान्य होता है। यदि प्रश्न करते है कि वाच्य को गुणीभूत करके व्यङ्ग्य को प्रधान करें, तो वहाँ ध्वनि का विषय हो सकता है, किन्तु वही ध्वनि है, ऐसा नहीं हो सकता।

इस प्रकार से अलङ्कार में ध्वनि के अन्तर्भाव को निषेध करके उपसंहार करते हुए आनन्दवर्धन कहते है-

व्यङ्ग्यस्य यत्राप्राधान्यं वाच्यमात्रानुयायिनः
समासोक्त्यादयस्तत्र वाच्यालङ्कृतयः स्फुटाः ।
व्यङ्ग्यस्य प्रतिभामात्रे वाच्यार्थानुगमेऽपि वा
न ध्वनिर्यत्र वा तस्य प्राधान्यं न प्रतीयते ॥
तत्परावेवशब्दार्थौ यत्र व्यङ्ग्यं प्रति स्थितौ ।
ध्वनेः स एव विषयो मन्तव्यः सङ्करोज्झितः ॥

इस प्रकार से आचार्य आनन्दवर्धन ने अलङ्कारों में ध्वनि अन्तर्भाव का निषेध किया हैं ।

धन्यवाद